जल

मोती प्रसाद साहू

जल अमूल्य उपहार समझ लो
मुठ्ठी कर मजबूत पकड़ लो।
नहीं करो बेमतलब दोहन
धन की तरह करो व्यय मोहन!
अब हैंडपम्प विद्युत संचालित
करते स्नान वस्त्र प्रक्षालित।
गाय भैंस बछिया नहलाते
मोटर साइकल कार धुलाते।।
मुख-मंजन कुल्ला भी करते
आंख नाक भौं भी हैं धोते।
बारी-बारी से घर के सब
प्रतिदिन जल बर्बादी करते।।
अच्छा होता संचित जल से
नित्य क्रिया सब करते क्रम से
भू-जल भी बर्बाद न होता।
गलियों में जल जाम न होता।।
जब भी जल की इच्छा जागी
या आमा को दवा है खानी।
एक घड़ा जल जब भी भरते।।
पावर बटन आन हैं करते।।
गांवों के झगड़े ज्यादातर
होते जल निष्कासन को लेकर
कलह रहित स्वच्छ हों गांव
बूंद-बूंद का जाने भाव।।
पावर पद्धति जल निष्कासन
तभी करें जब बड़ा प्रयोजन
बदलें आदत बचायें पानी
जिससे हम कहलायें ज्ञानी।

जल कहता मैं भ्रमणशील हूँ
कभी ठोस हिम कभी तरल हूँ।
कभी वाष्प बन नील गगन में
बनता मेघ सरल अविरल हूँ।।
सुगम सभी से पंचतत्व में
भू से लेकर भूतल तक में।
रत्नाकर से आसमान तक
पर्वत निर्झर नदी नाल में।।
तेरे भीतर भी मैं प्राणी
मेरे द्रव से चलती नाड़ी।
अधिक कहूँ क्या जीवन हूँ मैं
सृष्टि रची है मैंने सारी।।
मानव तेरा संस्कार हूँ
सारे तीर्थों का आधार हूँ।
क्यों मैला मुझको करते हो
साफ स्वच्छ सुन्दर विचार हूँ।।
वृक्ष हमें करते हैं निर्मित
इनसे मेरी पक्की यारी।
जहां धरा पर वृक्ष नहीं हैं
अनावृष्टि क्रम सब दिन जारी।।
सागर पर्वत वन नदियां मिल
करते एक श्रृंखला निर्मित
यदि श्रृंखला टूट गयी तो
होगा क्या यह सर्व विदित।।।
यदि श्रृंखला तोड़ी है तो
मिल जुल कर मजबूत बनाओ।
दर जनसंख्या-वृद्धि रोककर
नये-नये वन क्षेत्र उगाओ।।

कहां गये वे कमल जलाशय
कहां गया वह शीतल पानी।
बैठ किनारे या उड़-उड़ खग
करते थे गुंजित मधु वाणी।।
फूलों के अल्हड़ डाली के
कहां गये खग नीले-पीले।
कहां गये वे दृश्य रसीले
जो करते थे तन-मन-गीले।।
कहां गयी आम्र-अमराई
कहां गयी कोमल मधुमासी
नहीं सुनाती गीत सुरीला
जैसे कंठ लग गयी फॉसी।।
कहां गये वे फूल बेतुके
जो उग आते थे यहां वहां।
जिनकी सुगंध मन भर देती थी
फैल हवा से जहां-तहां।।
कहां गया चिड़ियों का कलरव
कहां गयी ध्वनि जल की कल-कल।
लुप्त हुए ये कर्ण-रसायन
बढ़ा जा रहा जन कोलाहल।।
कहां गयी मीठी फल बगिया
कहां गये वनजीव बिचारे।
जिनके बिन एकांत खो गया
मन बोझिल तन थकित हमारे।।
बढ़ते मानव के पैर तले
वन नैसर्गिक पन गया कुचल।
कहकर विकास का नाम सदा
अपने भविष्य को रहा मसल।।
प्रकृति चित्र चिपकाने वालों
कब तक तृप्त रहोगे उससे।
बिन देखे यथार्थ प्राकृतिक
भावी जन पहचाने कैसे?

संपर्क करें:
मोती प्रसाद साहू
रा.इ.का. हवालबाग अल्मोड़ा-263 636
उत्तराखंड
मो. 9411703669